दो कविताएँ—

जगदीश गुप्त

देश भाव

मेरी बेटी की तरह

इस कमनीय देश में

ऊपर से नीचे तक

जैसे देवी निकल आई हो |

फूट-फूटकर

रिसने लगे हैं

बड़े-बड़े छाले

चित्रकूट यात्रा में

भरत के पाँवों की

याद दिलाते हैं झलके |

किंतु भरत-मिलाप

नहीं हो रहा कहीं भी |

अनीति-दुनीति से

टूट रहा है मेरा यह देश !

देवी का प्रकोप है

जगह-जगह दंगों के रूप में

फूट रहा है लावा

प्रज्वलित ज्वालामुखी

बन रही है धरती यह |

हाथ में नीम का बौर लिये

माली की तरह कौन बिदा दे

रूठी हुई देवी को !

बेटी को तो बचा नहीं सका,

पर इस देश को तो बचाना ही होगा

मेरे भीतर के कवि को |

गांधी के देश में, नया रामराज्य

राम ने

सीता को निष्कासन दिया

तो उनके मन में पीड़ा भी हुई,

पर इस शासन ने

अंग्रेजी को स्थायी बनाकर

हिंदी के साथ

जैसा सलूक किया

उसमें किसीको, कहीं भी

दर्द का अहसास नहीं हुआ |

राजसूय यज्ञ के लिए

राम ने सोने की सीता बना ली

तो उसे सीता नहीं कहा गया |

पर इस शासन ने उर्दू को

जो दर्जा दिया

वह तो सौतिया डाह से ही संभव था |

बहन भी सौत बने

तो उसका स्वागत नहीं होता |

लगता है, आज की सरकार

छिपे-छिपे

अपने मन में

राजमहल बनाने लगी है

जहाँ हजार-हजार रानियाँ

राजा की शान समझी जाती थीं;

दो राजभाषाओं की तो बात ही क्या

वे हजार भी हो सकती हैं |

लोकतंत्र है, लोकतंत्र !

इसमें हर एक को हक है

अपनी-अपनी भाषा को

राजभाषा कहने का,

फरियादी होकर

या संघर्ष से

उसे मनवाने का !

अच्छा ही हुआ कि

रामराज्य का नारा उछालनेवाला

वह बूढ़ा, नहीं रहा |

'गांधी' शब्द का ऐसा दुरुपयोग देखता

तो इस बार

किसी गोली से नहीं

अपनी शर्म से मर जाता |

लेकिन आज

'गांधी' शब्द,

बेशर्मी का पर्याय हो गया है !

वह भी, इस अद्वैतवादी देश में—

जहाँ गांधी जन्मा था |

गांधी-युग में भी

दो लिपियोंवाला समाधान

इस देश को खंडित होने से बचा नहीं सका |

प्रेमचंद ने इसीलिए,

हिंदी-उर्दू दोनों के लिए

एक ही लिपि की वकालत की थी|

आश्चर्य है, वाममार्गी ही उसे भूल गए !

और उन्हें, बासी भात में

खुदा का साझा भी याद नहीं रहा |

आज दो राजभाषाएँ हुईं

तो कल दो झंडे होंगे

(जैसा हो चुका है)

और आगे दो दिल्लियाँ भी |

क्योंकि कुत्सित राजनीति ने

उर्दू को अलगाव की भाषा बना दिया है

भला हो महाभारत सीरियल का

उर्दूवाले भी अब

हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ का नाम

बखूबी जान गए हैं |

राष्ट्रकवि ने ठीक ही तो कहा था—

'भारत न दुर्दिन देखता, होता महाभारत न जो ।'

[साहित्य अमृत मासिक पत्रिका-रजत जयंती विशेषांक—मई 2020 से सितम्बर 2020(संयुक्तांक)]